

107	S. H. H. H.
107	S. H. H. H.

ARJUN ARCHIVES

ध्यानं तदा रां मे काचिल्ल करनं प्रसासु लेखो ज लाय तायां
रमिता वदे वलः लभते कृ तासु निम दलं भवतु कन
कवर्णाः सर्वलोकै विनि मुक्त सुरमनज विभृष्ट चंद्रव
दिविति कांतिः धनकनकसिद्धि जायते राजवंशि
सुगतवर गृहे समी कायकमानं कृ ता औमं दले ये सुते
ये सर्वे तथा गत अधिस्थाना अधिस्थी तं तु स्वा हा ॥

लाहति सत्वा चिकिध न तपा वमं दल सतो ते मय
लसत्वा उय का वलि सतय औ चन्द्रार्क विमले स्वा
हा ॥ औ वज्रसत् सर्वविघ्नान् सारयहे ॥ मन्दलसत्
नवोये ॥ औ हमा मधमे रमे नम दधुस औ ह्रीः

मध्वे
मधमे रमे नम ॥ दधुस ॥ औ सुंः सूकमे रमे नम ॥ दधुस
औ यं पुर्व विदि हाय नम ॥ पुर्व ॥ औ रं जं वोधि पाय नम ॥ द
धिन ॥ औ लंः अपरगो दा वरि हाय नम ॥ पादम ॥ औ वं उत
रकुरुवे नम ॥ औ या उपदि पाय नम ॥ भग्ना ॥ औ वा उपदि
पाय नम ॥ नैरित्य ॥ औ ला उपदि पाय नम ॥ वायु ॥ औ वा
उपरि पाय नम ॥ इत्या ॥ औ यं गजरत्नाय नम ॥ दु ॥ औ
रः असेरत्नाय नम ॥ द ॥ औ लः पुरुषरत्नाय नम ॥ प ॥
औ वस्तिरत्नाय नम ॥ उ ॥ औ या स्वक्त्ररत्नाय नम ॥ अ ॥
औ राः मनिरत्नाय नम ॥ ने ॥ औ ला वक्त्ररत्नाय नम ॥
वा ॥ औ आ सर्व निधाने नम ॥ इ ॥ औ वं चद्राय न

म॥ **प** ॥ ॐ सुंः सूर्यो यनम॥ **प** ॥ ॐ आः इं श्री वज्र
गुरुभ्यं नम॥ **दशुसं** ॥ मंदलपुजा गाय॥ ॐ वज्रपुष्पे
स्वाहा॥ ॐ वज्रधुपे स्वाहा॥ ॐ वज्रदिये स्वाहा॥ ॐ व
ज्रगन्धे स्वाहा॥ ॐ वज्रनेत्रे स्वाहा॥ ॐ वज्रलाज्याय
स्वाहा॥ **जाकि मंदलमधुना व मंदलमहायके**॥ च
तुरत्तं मयं मेरुमलदियः पत्तो भित्तं नानारत्नं समा
किर्णः तदेतुतरदायनिगुरुभ्यो बुधः धर्मैभ्यश्चः सं
धैभ्यश्च तथैव वनिर्या तया मीभावेन संयुर्गोरत्नम
दत्तं॥ **जाकि हाजलपाओ चोने**॥ ॐ आः इं श्री मत्तवः
जसतगुरुवरचरनकमलाय संम्यक्ताना भवामनक

रायेन मोहं नमस्ते नमो नम भगव्या इं तानम
स्थामि श्रीगुरुनाथं प्रसिधमे॥ ॥ यस्य प्रसादकि
रनेः फलिततात्मतत्वरत्नपुभाप्रतिकरप्रहतांधका
रापरं पुनविरोधश्रीसविरासमुवैतस्मीनमकृतलं
यं गुरुभास्कराय॥ ॐ नमो बुधाय गुरुभ्य नमो धर्मा
य तत्र निनमो संघाय महत्तमे तिभ्योपि सततं तं रा
मो सर्वबुधनमं स्था मीधर्मं च जिनभारि तं संघं च
सितसुव्रत्तत्रय नमो सुते रत्नत्रयमेसरने सर्वं
प्रतिदित्तमेध अणुमोदे जगत्पुत्र बुधबोधो ददे
मम आवोधो सरने गामि बुधः धर्मं जनस्तमः बोधि

चित्तकरो मेरुसोपगार्थं प्रसिधमेः उत्पादयामि पर
 मंवरकोधिचित्तं निमंत्रयामि अहं सर्वसत्त्वांश्चान्तरि
 व्यक्तकोधिरारिकावृद्धो भवेयं जगतो हिताय ॥ ॥
 देशानां सर्वपापानां युग्मानां च। मोदिनां कृतप्रभासं
 चरिष्यामि आर्याणां गणेषु बलं मया बालेन मुर्धेन जत
 किं चित्पापमागम्य कृत्वा वश्यसा वश्यः प्रकृत्वा वदे
 मेव च। तदन्तेयं देशयामि मेघनाथानामगुप्तस्थितं कृ
 तां जलिदुर्गमिममपुनियत्यपुनयुनः अत्ययं मत्पयं
 तेन प्रतिगच्छतु नायकः नमदकमिदं नाथं शाकतः।
 यपुनर्मेयाः जथाते तथा गतायां आर्या अहं ते सम्पद

संवृधत्तानेन वृद्धः वशुवायानेति पश्यति तत्कृतसत्तु
 लज्जातिके जंनिका यजस्व भावं जनरत्नं जयाधर्म
 तथा संविद्यते तथा इयं परिनामयामि नित्यं परिनाम
 यामि तथा ममानेन समाधिका लं लोकस्य हर्तुं वकर
 तुं च सदा तु सत्कृतमप्युक्तं संजयै भवानुदससत्तनुमु
 स्रति मागतो भा एथ कथाजोगमुपागतो भाः सर्वप्रका
 रं जगतो हिताय ॥ वहिस तं वतय ॥ ॥ ॐ ह्रीं आवम
 नं प्रोक्षनं प्रतिदुस्वाहा ॥ ततो ये कालेन वायुमंदलं त
 दुपरिरंजाता भग्नी मंदलं तत्र सुकृशितपद्मभाजने
 तत्र भक्तारिपरिहृतिं ॐ भूँ औं जिँ रँ वँ हँ लँ मँ पाँ ताँ
 वै कालं जातपचासतपचरूपं पश्यत ॥ जहँ वै हो ॥ व

कुरु जगत्पति जगत्पति

लिखा वीर्य ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ जमाय स्वाहा ॥ ॐ व
 हनाय स्वाहा ॥ ॐ कूबलाय स्वाहा ॥ ॐ अग्नीय स्वाहा ॥
 ॐ नैरित्य स्वाहा ॥ ॐ वायुय स्वाहा ॥ ॐ इशानाय स्वाहा
 ॐ उर्ध्वं सनिय स्वाहा ॥ ॐ अर्द्धं पृथिवे स्वाहा ॥ ॐ चंद्रान
 क्षत्राधिपतय स्वाहा ॥ ॐ सूर्याग्रहाधिपते स्वाहा ॥
 ॐ गंगागेभ्य स्वाहा ॥ ॐ अतुरेभ्य स्वाहा ॥ ॐ सर्वजसः
 भ्य स्वाहा ॥ ॐ दशदिगलोकपाले स्वाहा ॥ ॥ वसिष्ठ
 पत्रोपहारयुजा ॥ वज्रपुष्पे स्वाहा ॥ वज्रपुष्पे स्वाहा ॥ व
 गन्धे स्वाहा ॥ वज्रनैवय स्वाहा ॥ वज्रदिये स्वाहा ॥ वः
 जलाभ्याय स्वाहा ॥ ॐ वज्रतासे इं ॥ ॐ वज्रमाते त्रों ॥ ॐ

पृथिवी
 दिग्ग
 ५

वज्रगीते हों ॥ वज्रनित्यम् ॥ वज्रपुष्पे इं ॥ वज्रपुष्पे त्रों ॥
 वज्रं वलोकिते हों ॥ घंठवजे अ ॥ वज्रवज्रं दर्शने इं ॥ रस
 वजे त्रों ॥ परतु वजे हों ॥ धर्म धातुगर्भे अ ॥ सिद्ध ॥ ॐ
 ॐ इं स्वाहा वज्र ॥ ॐ हो स्वाहा घंठ ॥ वज्रसत्त्वसंज्ञा त भव
 वज्रसत्त्वमजुतरवज्रधर्मं ग्राहिनि वज्रकर्म कुलो भवं
 ओ आहं त कि जहं त कि ज हो ॥ ॐ इन्द्रादयो महाराजा
 लोकपाला महर्षि काकीलयंति दशकोर्ध्वं विद्युहंता न
 मस्तुते ॥ तर्पण ॥ विश्राणं बुध विं वें दिवस करधरा
 रास्य पाविंदु ते वं मैत्रियं चारु रूपः शिव भि वय युषं
 मजुद्यो मं च गरा लं य शो र्ने दं द रूपं कु हित ल व यु वज्र

निभिमनादं विज्ञानेनानरुपं नभस्तु परिभवयंचमु
निपुनम् ॥ **स्वां जा किलं य सधु ना व सं द ल स हा य के**
ॐ इदादि वदिसहदेव सधैरि सं च ग दं तु वति विसेय
अग्नै जग नैरित्यभुयतिश्च आपा पति पा वा यु ध ना धि
पतिश्च ईशान भुजा धिपतिश्च देवा उर्ध्व चंद्रा कपितां
महश्च देवा समं ता भुव वे च ना गा धरा **१ गुहे गणौ समं**
नापति २ लोक निवेदयं तु स्व क श्र का श्रै व दि शा स भु
ता ग दं तु तु स्वा स वि रा स सै न्याः सह पुत्र दारा सह भृत्य
संघा युष्मं वति धुपं वति विलेपनं च भुजं तु पीवं तु जि
घ्रं तु इदं च कर्म सफलं जुगं तु स्वाहा ॥ **॥ ह न हा च के**

ॐ नमो रत्न त्रयाय चंद्र पानय महा वज्र को धाय इक्ष
कत मे र वाय असि मु स ल पर सु पा स गृ हित ह र ना य
ॐ अमृत कु द लिख ख र वा हि २ तिष्ठ २ व ध २ ग र्ज २
विष्फोटय २ महा ग न पति जि वि तां श्व का रा य व पु
वाय ॐ आ इं फ ट् स्वा हा ॥ **॥ व लि रा पं च भा र यु जा ॥**
तर्पन ॥ स ता स्म ॥ ॐ वज्र स त्त स म य म नु णा ल य व ज्र
स त्ते न प्र ति स्मृ द्दो मे भवः सा सु त ष्यो मे भव सु त ष्यो
मे भव अ नु र क्तो मे भव सर्व सि धि मे प्री यं द्य सर्व क र्म सो
चित् मे चित् श्री यं कुरु इं ह ह हः हो भग व न् सर्व तथा
गत वज्र मानेन मुं च वज्री भव महा समय सत्ता ॥

मंदलधोरु ॥ कृतो व सर्व सत्कार्यं सिधिनत्वा जथानु
गा गच्छोन्मिधि विषये पुनलायगमनाय ॐ आइं
वज्रमं तुलमुः ॥ ॥ पंचगव्यं ध्याय धुने वसदत्ता
तं विषय धुने वा ॥ मंदलसलव कोया सिद्ध मुनय ॥
त्वा वीर्य ॥ ॐ वै लोचनाय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ अम
र्यो भ्याय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ ॐ रत्नसंभवाय
वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ ॐ अमिताभाय वज्रपुष्पं प्र
तिदत्त्वा हा ॥ ॐ अमोघसिधिय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा
हा ॥ ॐ मामा कियत्त्वा हा ॥ लोचनिय वज्रपुष्पं प्रति
दत्त्वा हा ॥ अपमनिय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ ॐ ता

राय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ ॐ वज्रपुष्पे स्वाहा ॥ ॐ
वज्रपुष्पे स्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ वज्रगन्धे स्वाहा ॥ सिद्ध ॥ अ
वज्रनैवय स्वाहा ॥ नैवय ॥ ॐ वज्रदिये स्वाहा ॥ मज
वज्रराज्याय स्वाहा ॥ ताय ॥ मंदलसलव कोया स्थानया
॥ ॐ सुप्रथित वज्रे स्वाहा ॥ धनलिदे अतिस्पसक
लभिनं सिद्धं तय वा के ॥ ॐ कुंलास्याय स्वाहा ॥ ॐ उद्याता
दरवक्रतो निधुदुता विदुदुता भास्वरा दग्धादित्रयात्र
यो कधारात्रयो क महीतापियुषधारा पुरता दधज्ञानर
ता विकारिकरुता स्वां सदाररितीर्ध का फुरजभुवारा हि
कां प्रातभुचेतश्री ॥ निर्माणादिदिने समंदलगता का
यादिवर्णावृता प्रजाता मलनुवृं जलमृतसुभा सुक्ष

भातोपमाविद्यावृधकथंवहत्तत्रयोचक्रत्रयोभे
दनिस्त्रांनदालरितोरधकाफुरतभुवागहिकोप्रातभु
चेतश्री॥धुनेवथमनतीयेसकस्याततिके॥ धनं
तिअंतिपायिराकोरं सगंधउःमतयातभावनातः
स्वीतयेकके॥ भगवानश्री ३रविससिमामकिदेवता
आराधनापुंजाशिमित्यार्थ॥ स्वभावसुधासर्वधर्मा
नास्वभावसुधोदंशुन्यताज्ञानवज्रस्वभावात्मकोह॥
धुतयवाके॥ ॐ भगवनश्री अमुकसकजविद्याराजन
मोमुतेकरतुमिध्नामितेनाथंमदंलं करुनात्मकं सि
यानांमनुकं पार्थश्रु कमाकं पूजनायकः तमेभगतस्य

भगवनप्रसारदककर्तुमईसिसमंन्वाहर्तुमाचर
धाथजगच्चक्रियार्थदाः बोधिसत्ताश्चजावान्याम
त्रदेवतादेवतालोकपालासंबोधिसामनासाधनाभे
र्त्तयेकेचित्अनुकंपामुपादायसत्तसिष्यं ॐ आवज
धुपंप्रतिदत्त्वाह॥ धनलिपाशिनसयाचसत्ताविकि
धनधुसंस्तुतिनकावः पात्रसजीनगुधभतिहोत्वं
विजाहारोत्वंसोधनयायवाके॥ ॐ हहोहोः अरवं
त्वाह॥ हकालेहरतेभरनंहीकालेगंधनासनेहोका
लेविजहत्ताचअमृताकालेअमृतेअमृतरूपंपपत्त
निसंतनाकिगकयाहजसगवोनेवाके॥ ॐ अथमे

सकलं जन्मसंसारं लंघयितुं च मे समयः सर्वदेवानां भवे
त्राहं न स शयः अशो मे दिवसो हः स सर्वं बुधनि मंत्रया
मि॥ **चामेदलाय वाके** ॥ ॐ वज्रभुमे इंसुते वे इंसर्वतथा
सुवर्गा ज न धारि स्वाहा ॥ **सि न ति के वाके** ॥ इदं ते प
त्रं गंधं सहस्रं जितं जथा दर्शयिष्यामि काशौ रचं
न दनं कुं कुं ॐ भावज्जसिंधु तिल वधु वचे स्वाहा ॥
जज का तय वाके ॥ ॐ वज्रवक्त्रं कारयुजामेष्टोऽसु
इफलं न समयजशो पवित्रं वज्रवाससे स्वाहा ॥ **सा**
दाय वाके ॥ ॐ सर्मथस्वस्ति वक्रतां बुधस्वस्ति देवा
सहस्रकास्ति सर्वा न भुतानि सर्वकालं दि संतु वः ॥

इष्टुया नु भावेन देवतानमस्ते न चः यो यो अर्थसम
भिप्रेत सर्वथो दि स मा धि ताः स्वस्ति वो धो पदे भवेतु
स्वस्ति वो धि वनु प्यदेः स्वस्ति वो वज्रता मार्गे स्वस्ति
प्रत्यां गतेषु च स्वस्ति रात्रौ स्वस्ति दीया स्वस्ति मध्य दि
ने स्थो त सर्वत्र स्वस्ति वो पदे भवेतु मा ग चैषां पाप मा
गस सर्वसत्ताः सर्वप्रानाः सर्वभुताश्च के वलाः सर्ववै
मुक्ति न संतु निरात्मया ॥ सर्वभद्रा निपत्य तु मा घ के
वा पाप मा ग सः जानि ह भुतानि सर्वा गतानि स्थी ता
नि भुमां यथ मां तरिक्ष कुर्वतु मे त्रि स त तं प्रजा सु दि
वा च रात्रौ च चरंतु धर्म ॥ **हो जा सा म य दाय वाके** ॥ ॐ
नैव य सक संजु तं वा ज्य भा जं स म या च कं वज्र नै वि य

स्वाहा ॥ **धालायाय वाके** ॥ ॐ नमो भगते विरे विरेभ
राय इं फट् ॥ महा कल्या मि सनि भाय इं फट् ॥ जताम
कुटोकटभैरवाय इं फट् ॥ इष्टा कला लो गुभीषनमु
वाय इं फट् ॥ सहस्रभुज परसुपासत्रि शुररवदोग
धारि निय इं फट् ॥ वायुजि नांवरधारि निय इं फट् ॥
महाधुमांभकाराय इं फट् ॥ **सतविष** ॥ नेत्राभिरात्मा
महुरत्नकोषानराधिपारविजयपादयशो ज्ञानप्रतिपा
हतमोलमलाजलदिपमालारचयंति तत्रवज्रदिपंपु
तिदस्वाहा ॥ **पुष्पपासयाय वाके** ॥ असुनिय स्वाहा ॥
त्यादि ॥ **धनेलियकोपहा** ॥ पुजामंत्रतर्पण ॥ **धनेलित्ता**
यजययाय ॥ जेधर्माहेनुप्रभावाहेनुतेयां क्योनिरो

धस्वेवादिमहाश्रवने ॥ **धने** ॥ **॥ इति**
नावपुजायाय ॥ अकालमुखसर्वध ॥ **नीमायनुपे**
तां ॐ आः इं फट् स्वाहा ॥ **आदिपुजायाय** ॥ ॐ मजुश्रायं
कुमालभुताय कोधिसत्ताय महासत्ताय महाकाहने
कायतोदरदक्षनासे अबदोषयामि ॥ **सताशरत्नादि**
धुतिसगंसतथापिपुजायाविधिमुक्ता ॥ ॥ **धनेलित्ते**
वपुजायाय ॥ **हापांभावनास्तोत्रय** ॥ भगवान् श्री ३३
मुक्तेदेवतापुजानिमित्तार्थस्वभावमुधात्यादि ॥ **धने**
लिपुंतयवाके उच्य ॥ निमंत्रनाउच्य ॥ **धनेलित्सकान**
यातके हापांः लघतयः साइइः येतकलीः वायदेदा
तयवाके ॥ ॐ जमंगलंसकलसत्तहर्दस्थितस्य वि

भात्मकस्य ॥ कुलाधिपत्यनित्यकसत्तुधन
 कस्य महासुखात्मकस्य तत्तदलंभवतु ते पराभाभि
 वेक ॥ वूँ औं जिं बूँ ॥ तं पतत्यं हृत्कनकेन वाके ॥ प्र
 ति वीं वसमाधर्मा आक्षुधाहेन विराभग्राहानभिगा
 प्याथ हेतुकर्मसमुत्पवं ॥ तनान काय ॥ औं सर्वतथा
 गत अभिवेकसमश्चेद् ॥ धामदलधिते उथं ॥ सिद्धं
 तं त्रिके उथं ॥ ज जमका तय उथं ॥ देवताया सुतमंत्रन
 तान ज पयास्यं दाय उथं ॥ हो जाः समयः धाताः मतवि
 यवाके उथं ॥ पुष्पं न्यासया ॥ वैलोचनाय त्यादिः पं
 चपहारपुजा तात्पायं ठा वादन लुतिः मंत्रद्वयं ॥ सुहमे
 वनं ताय ज पयास्यं पुजाया ये ॥ जेधर्मा ॥ अकालमु

यत्यादि ॥ दक्षना कितये ॥ सत ॥ त्रित्यादि
 इति देवपुजा ॥ ॥ धनं लिखाकपुजा ॥ धोपणीथाय
 लाहा ॥ दंडोपदंडाय लाहा ॥ मेलाय कवमेलाय क पमेला
 पकः समसा नपसमसानाय लाहा ॥ पुं ॥ ॥ मंद
 तयिते ॥ वज्रपुष्पोत्थाहान्यादि ॥ वनुरत्न्यादि ॥ धमंस
 कोसिलव वीनेः सताक्षर ॥ समापनमेदलविसर्जन
 सगंधाय ॥ मरुतिदाय ॥ धमनेसिद्धलणतिय ॥ वा
 देदादाय ॥ अभिवेककाय ॥ समयाचत्र ॥ पंचपहा
 रपुजालात्पायं ठा वादन लु ॥ मंत्रतर्पण ॥ तनाक्षर
 त्यादि ॥ कुतो वत्यादि ॥ ॥ इतिलय सिक्काजोले
 विधिसमाफ ॥ ॥ धमपुष्पोयागुः जिः मजी ॥ समायायमा

